Philosophy
B.A II
Hindi

स्पिनोजा

स्पिनोजा के अनुसार "पदार्थ (Substance) वह है जो अपनी सत्ता ~~के लिए~~ [illegible] किसी अन्य सत्ता पर निर्भर [illegible] जाता है और अपने अस्तित्व के लिए अन्य सत्ता पर निर्भर नहीं रहता।" इसकी विशेषता इन परिभाषा से निकलती निम्नलिखित है

(1) पदार्थ शुद्ध सत्ता (Pure being)। इसी सत्ता की दृष्टि से अनेकता में भी एकता का दर्शन होता है। विश्व के अनेक पदार्थों के भिन्न-भिन्न स्वरूप भले हो पर उनमें एक सामान्य तत्व अस्तित्वमान होता है। (2) पदार्थ विश्व का सर्वव्यापक [illegible]

(3) पदार्थ एक है। (4) पदार्थ असीम है (5) पदार्थ स्वतंत्र [illegible]

(6) पदार्थ स्वयंभू है। (7) पदार्थ आत्म निर्धारित है।

(8) पदार्थ अपरिवर्तनशील है। न इसकी उत्पत्ति होती है और न उसका नाश

(9) पदार्थ निर्गुण एवं अनिर्वचनीय है।

(10) पदार्थ व्यक्तित्वशून्य है।

पदार्थ में आत्म चेतना नहीं है, इसका मतलब यह नहीं कि वह निरशक्ति से भी शून्य है चेतना तो उसमें ही पर, उसे पता नहीं। जिस प्रकार सोचती है तो वह यह नहीं सोचती कि वह सोचती भी है।

है —

स्पिनोजा के पदार्थ की परिभाषा के रूप में लिखा जा सकता
स्पिनोजा बुद्धिवादी दार्शनिक हैं उन्होंने भी डेकार्ट
एवं लाइबनिज की भाँति ज्यामितीय प्रणाली का प्रयोग
किया। वस्तुतः यह ज्यामितीय प्रणाली बुद्धिवादियों
की देन है। इसके आधार पर वे आध्यात्मिक चीजों
को भी सिद्ध कर देते हैं। जिसे बुद्धि स्वीकार
नहीं कर सकती उसे भी ये ज्यामितीय प्रणाली के
आधार पर सिद्ध करते हैं। इस ज्यामितीय प्रणाली
में वे कुछ सिद्धान्तों को मान्यता के रूप में मानते
हैं जिन्हें ~~वे~~ स्वतः सिद्ध विचारों के आधार
के रूप में उपयोग करते हैं। तथा जिनसे निष्कर्ष
को प्राप्त किया जाता है।

ये ही विचारों में सिद्धि किया जा सकता है

इसी संबंधी विचार के लिए उन्होंने यह मान
लिया कि "द्रव्य वह है जो अपनी सत्ता को ~~[illegible]~~ स्वतंत्र
मानता है ~~[illegible]~~ तथा अपने अस्तित्व के लिए
दूसरे पर निर्भर नहीं करते।"

है → परन्तु इसी Theorem के द्वारा द्रव्य स्वतन्त्र